CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

* अथ *

# मूलरामायणम्

प्रारभ्यते ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection, Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

* श्रीगणेशाय नमः *

# * मूलरामायणम् *

## * भाषाटीकासहितम् *

—*—

जयति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः ।
दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥ १ ॥

रघुवंश के तिलक, कौसल्या के हृदये को आनन्द देनवाले, रावण का नाश करनेवाले, दशरथ के पुत्र, कमल समान नेत्रवाले भगवान् रामचन्द्र की जय हो ॥ १ ॥

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥ २ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



कवितारूपी डाली पर बैठकर मधुर स्वर में राम राम ( जैसे मधुर शब्द ) बोलनेवाले वाल्मीकिरूप कोकिल को नमस्कार करता हूँ ॥ २ ॥

वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः ।
शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥ ३ ॥

कवितारूपी वन में भ्रमण करनेवाले वाल्मीकिरूपी ( मुनि ), सिंह के रामकथारूपी नाद ( हुङ्कार ) सुनकर जो मोक्ष न पावे ऐसा कौन है ? ( कोई नहीं ) ॥ ३ ॥

यः पिबन्सततं रामचरिताऽमृतसागरम् ।
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषम् ॥ ४ ॥

जो सदैव रामचरितरूपी अमृत के सागर को पीते हुये भी कभी तृप्त न हुये, ऐसे पापरहित वाल्मीकि मुनि की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ४ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥ ५ ॥

जिसने समुद्र को गौ के खुर और राक्षसों को मच्छड़ के समान कर दिखाया, उस रामायणरूपी महामाला के श्रेष्ठ रत्न (वायुपुत्र) हनुमान जी की मैं वन्दना करता हूँ ॥५॥

अञ्जनीनन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लंकाभयंकरम् ॥ ६ ॥

अञ्जनीनन्दन, सीताजी का शोक दूर करनेवाले, बन्दरों के स्वामी, अक्षयकुमार को मारनेवाले, तथा सम्पूर्ण लङ्कापुरी को भयभीत कर देनेवाले, वीर हनुमान्‌जी को मेरा नमस्कार है ॥ ६ ॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं
यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



आदाय तेनैव ददाह लंकां
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ ७ ॥

जिसने कौतुक पूर्वक समुद्र के जल को लाँघकर सीताजी की शोकरूपी अग्नि को लेकर उसीसे लङ्का को जलाया उस अञ्जनीपुत्र हनुमान्‌जी को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥८॥

मन और मारुत ( हवा ) के समान वेगवान्, जितेन्द्रिय, बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, वायु-पुत्र, वानरों की मण्डली में श्रेष्ठ, भगवान् राम के दूत श्रीहनुमान्‌जी को मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं
सीतापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपम् ।
आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं
रामं निशाचरविनाशकरं नमामि ॥ ९ ॥

श्रीराघव, दशरथ के पुत्र, अप्रमेय, सीतापति, रघुकुल के रत्नदीप, आजानुबाहु, अरविन्द ( कमल )दल के समान आयत [ दीर्घ ] चक्षुवाले, निशाचरों के नाशक भगवान् श्रीरामचन्द्र को मेरा नमस्कार है ॥ ९ ॥

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे ।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना ॥ १० ॥

वेद से जाने जावें, ऐसे परब्रह्म, दशरथ के पुत्ररूप में उत्पन्न हुए, तब साक्षात् उन वेदों को ही वाल्मीकि महाराज ने रामायण के रूप में श्लोक-बद्ध किया ॥ १० ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



श्रृण्वन् रामायणं भक्त्या यः पादं पदमेव वा ।
स याति ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्मणा पूज्यते सदा ॥ ११ ॥

जो भक्तिपूर्वक रामायण के किसी श्लोक का एक चरण भी सुन लेता है वह ब्रह्मलोक को जाता है और सदैव ब्रह्मा की भाँति उसकी पूजा होती है ॥ ११ ॥

यः कर्णाञ्जलिसम्पुटैरहरहः सम्यक् पिबत्यादराद्-
वाल्मीकेर्वदनारविन्दगलितं रामायणाख्यं मधु ।
जन्मव्याधिजराविपत्तिमरणैरत्यन्तसोपद्रवं
संसारं स विहाय गच्छति पुमान् विष्णोः पदं शाश्वतम् १२

जो मनुष्य ध्यान से कान लगाकर प्रतिदिन श्रीवाल्मीकि मुनि के मुखरूपी कमल से निकलते हुए रामायणरूपी मधु [ शहद ] को भली भाँति पीता है, वा जन्म व्याधि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDE, Delhi



जरा मरण इत्यादि अनेकानेक उपद्रवों और दुःखों से पूर्ण इस संसार को छोड़ कर विष्णु के शाश्वतपद को प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

तदुपगतसमाससन्धियोगं सममधुरप्रणतार्थवाक्यबद्धम् ।
रघुवरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वधं निशामयध्वम्॥

जिसमें समास, सन्धि इत्यादि का भली भांति संयोग है और जो नम्र, मधुर एवं सम अर्थवाले वाक्यों से पूर्ण है, वाल्मीकि मुनिप्रणीत ऐसे रामचरित और रावणवध को ध्यानपूर्वक सुनो ॥१३॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्त्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् १४

जहाँ २ रामभजन होता है वहाँ २ हाथ जोड़े, प्रेमाश्रुपूर्ण नेत्र किये हुए, राक्षसों का अन्त करनेवाले हनुमान्‌जी उपस्थित रहते हैं, ऐसे रामभक्त हनुमानजी को नमस्कार करो॥१४॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



वाल्मीकिगिरिसम्भूता रामसागरगामिनी ।
पुनातु भुवनं पुण्या रामायणमहानदी ॥ १५ ॥

वाल्मीकिरूपी पर्वत से उत्पन्न होकर रामरूपी सागर की ओर जानेवाली रामायण रूपी महानदी [ गङ्गा ] त्रिभुवन को पवित्र करती है ॥ १५ ॥

जितं भगवता तेन हरिणा लोकधारिणा ।
अजेन विश्वरूपेण निर्गुणेन गुणात्मना ॥ १६ ॥

जगत् को धारण करनेवाले जन्मरहित, विश्वरूप, निर्गुण एवं गुणात्मा हरि भगवान् ने सब जीत लिया है ॥ १६ ॥

आमिषीकृतमार्त्तण्डं गोष्पदीकृतवारिधिम् ।
तृणीकृतदशग्रीवमाञ्जनेयं नमाम्यहम् ॥ १७ ॥

Jagannath Bhattarai Collection, Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF - Delhi


सूर्य का निगलने वाले, समुद्र को गोपद के समान कर देनेवाले, रावण को तृण के समान बना देनेवाले, अञ्जनीपुत्र महावीर को नमस्कार है ॥ १७ ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥ १८ ॥

कञ्चन पर्वत के समान [ वर्णयुक्त ] कमनीय [ सुन्दर ] शरीर वाले, पारिजातवृक्ष के मूल में निवास करनेवाले, पाटलानन, आञ्जनेय का ध्यान करता हूँ ॥ १८ ॥

श्लोकसारससंकीर्णं सर्गकल्लोलसंकुलम् ।
काण्डग्राहमहामीनं वन्दे रामायणार्णवम् ॥ १९ ॥

श्लोकरूपी सारसों से संकीर्ण, सर्ग [ काव्य में अध्याय वा परिच्छेद की जगह प्रायः सर्ग शब्द व्यवहृत होता है ] रूपी कल्लोल से युक्त, काण्डरूपी ग्राह और बड़ी मछलियों से भरे हुए रामायण रूपी समुद्र की वन्दना करता हूँ ॥ १९ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal.

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम् ।
सुग्रीवं वायुसूनुं च प्रणमामि पुनः पुनः ॥ २० ॥

श्रीराम, लक्ष्मण, सीता, भरत, शत्रुघ्न, सुग्रीव और हनुमान् को बारम्बार प्रणाम करता हूँ ॥ २० ॥

इति कुशलवयोर्मङ्गलस्तवं पठित्वा मूलरामायणं पठेत् ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF - Delhi


# अथ मूलरामायणं प्रारभ्यते ।

तपःस्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम् ।
नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम् ॥ १ ॥

तप और स्वाध्याय में निरत, बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, मुनिश्रेष्ठ नारद से तपस्वी वाल्मीकि पूछते हैं ॥ १ ॥

कोन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान् ।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ॥ २ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



इस समय इस लोक में गुणवान्, वीर्यवान्, धर्मज्ञ, अपने व्रत में दृढ़ और सत्यवादी कौन है ? ॥ २ ॥

चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः ।
विद्वान् कः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः ॥ ३ ॥

चरित्र सम्पन्न कौन है ? कौन समस्त संसार का हित करनेवाला है ? विद्वान्, समर्थ और जिसका दर्शन सबके लिये सुखदायी है वह कौन है ? ॥ ३ ॥

आत्मवान् को जितक्रोधो द्युतिमान् कोऽनसूयकः ।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे ॥ ४ ॥

आत्मवान्, क्रोध को जय करनेवाला, तपस्वी, ईर्ष्या द्वेष हान आर युद्ध में क्रुद्ध होने पर देवता भी जिससे डरें एसा कौन हैं ? ॥ ४ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF, Delhi



एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं परं कौतूहलं हि मे ।
महर्षे ! त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम् ॥ ५ ॥

इन बातों को जानने का मुझे बड़ी इच्छा और उत्कण्ठा है । हे महर्षे ! आप ऐसे मनुष्य को जानने म समर्थ हैं ॥ ५ ॥

श्रुत्वा चैतत् त्रिलोकज्ञो वाल्मीकेर्नारदो वचः ।
श्रूयतामिति चामन्त्र्य प्रहृष्टो वाक्यमब्रवीत् ॥ ६ ॥

वाल्मीकि मुनि का यह बात सुन, त्रिलोकज्ञानी नारद ने 'सुनिये' ऐसा कहकर कहना आरम्भ किया ॥ ६ ॥

बहवो दुर्लभाश्चैव ये त्वया कीर्त्तिता गुणाः ।
मुने ! वक्ष्याम्यहं बुद्ध्वा तैर्युक्तः श्रूयतां नरः ॥७॥

Jagannath Bhattarai Collection, Nagariun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



हे मुनि ! आपने जिन गुणों के सम्बन्ध में पूछा है, वे संसार में बहुत दुर्लभ हैं तथापि उन गुणों से युक्त नर की बात विचार कर कहता हूँ, सुनो ॥ ७ ॥

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः ।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी ॥ ८ ॥

इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न राम ही ऐसे पुरुष हैं जो जनश्रुत ( संसार-प्रसिद्ध ), नियतात्मा, वीर्यवान्, धैर्यवान् और जितेन्द्रिय हैं ॥ ८ ॥

बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिबर्हणः ।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः ॥ ९ ॥

वह राम बुद्धिमान्, नीतिमान्, पण्डित, श्रीमान्, शत्रुओं का नाश करने वाले, चौड़े स्कन्ध एवं बड़ी भुजावाले, बड़ी ठुड्डी और शङ्ख के समान सुन्दर गर्दन वाले हैं ॥९॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF, Delhi.



दान में कुबेर, सत्य में दूसरा धर्मराज, इन गुणों से युक्त ( जगत् में ) सत्य पराक्रम राम हैं ॥ १९ ॥

ज्येष्ठं श्रेष्ठगुणैर्युक्तं प्रियं दशरथः सुतम् ।
प्रकृतीनां हितैर्युक्तं प्रकृतिप्रियकाम्यया ॥ २० ॥
यौवराज्येन संयोक्तुमैच्छत्प्रीत्या महीपतिः ।
तस्याऽभिषेकसम्भारान् दृष्ट्वा भार्याऽथ कैकयी ॥ २१ ॥
पूर्वं दत्तवरा देवी वरमेनमयाचत ।
विवासनं च रामस्य भरतस्याभिषेचनम् ॥ २२ ॥

सब पुत्रों में बड़े, प्रकृति के हित में लीन, प्रजाप्रिय राम को राजा दशरथ ने प्रजा के हित के लिये युवराज बनाने का विचार किया । राम के अभिषेक की तैयारी देख,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



पूर्वकाल में ( राजा से ) वर पाई हुई दशरथ की प्यारी नारी कैकेयी ने उनसे राम के निर्वासन और भरत के राज्याभिषेक का वरदान माँगा ॥ २०-२२ ॥

स सत्यवचनाद्राजा धर्मपाशेन संयतः ।
विवासयामास सुतं रामं दशरथः प्रियम् ॥ २३ ॥

सत्य वचन से धर्म बन्धन में बँधे हुए राजा ने अपने प्रिय पुत्र राम को निर्वासित किया ॥ २३ ॥

स जगाम वनं वीरः प्रतिज्ञामनुपालयन् ।
पितुर्वचननिर्देशात् कैकेय्याः प्रियकारणात् ॥ २४ ॥

उस वीर राम ने कैकेयी की भलाई तथा प्रतिज्ञा का पालन करने के लिये पिता की आज्ञा मान वन को प्रस्थान किया ॥ २४ ॥

Jagannath Bhattarai Collection, Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


तं व्रजन्तं प्रियो भ्राता लक्ष्मणोऽनुजगाम ह ।
स्नेहाद्विनयसम्पन्नः सुमित्रानन्दवर्द्धनः ॥ २५ ॥

स्नेह और विनय से सम्पन्न, सुमित्रा को आनन्द बढ़ानेवाले, प्यारे भाई लक्ष्मण ने भी भाई को वन जाते देख, स्नेह-वश उनका अनुगमन किया ॥ २५ ॥

भ्रातरं दयितो भ्रातुः सौभ्रात्रमनुदर्शयन् ।
रामस्य दयिता भार्या नित्यं प्राणसमा हिता ॥ २६ ॥
जनकस्य कुले जाता देवमायेव निर्मिता ।
सर्वलक्षणसम्पन्ना नारीणामुत्तमा वधूः ॥ २७ ॥

वह लक्ष्मण भाई को प्रिय और अपना भातृत्व प्रदर्शन करने वाला था। राम की भार्या सदैव जिनके प्राण समान थी । वह जनककुलोत्पन्न, देवमायानिर्मित, सब लक्षणों से सम्पन्न, नारियों में उत्तम वधू थी ॥ २६-२७ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



सीताऽप्यनुगता रामं शशिनं रोहिणी यथा ।
पौरैरनुगतो दूरं पित्रा दशरथेन च ॥ २८ ॥

सीता ने भी राम का अनुगमन उसी प्रकार किया, जैसे रोहिणी चन्द्रमा का अनुगमन करती है। पुरवासी लोगों ने तथा पिता दशरथ ने भी राम का थोड़ी दूर तक साथ दिया ॥ २८ ॥

शृङ्गवेरपुरे सूतं गङ्गाकूले व्यसर्जयत् ।
गुहमासाद्य धर्मात्मा निषादाधिपतिं प्रियम् ॥ २९ ॥

शृङ्गवेरपुर में गङ्गा के किनारे पहुँच कर राम ने सारथी को विदा किया और निषादों के राजा; धर्मात्मा एवं प्रिय गुहराज से मिले ॥ २९ ॥

गुहेन सहितो रामो लक्ष्मणेन च सीतया ।
ते वनेन वनं गत्वा नदीस्तीर्त्वा बहूदकाः ॥ ३० ॥

Jagannath Bhattarai Collection, Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


चित्रकूटमनुप्राप्य भरद्वाजस्य शासनात् ।
रम्यमावसथं कृत्वा रममाणा वने त्रयः ॥ ३१ ॥

गुह, लक्ष्मण और सीता के साथ २ राम वन के बाद वन तथा बड़ी बड़ी नदियों को पार कर भरद्वाज की आज्ञा से चित्रकूट में सुन्दर निवासस्थान बनाय, वन में रमण करने लगे ॥ ३०–३१ ॥

देवगन्धर्वसंकाशास्तत्र ते न्यवसन् सुखम् ।
चित्रकूटं गते रामे पुत्रशोकातुरस्तदा ॥ ३२ ॥
राजा दशरथः स्वर्गं जगाम विलपन् सुतम् ।
गते तु तस्मिन् भरतो वसिष्ठप्रमुखैर्द्विजैः ॥ ३३ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



नियुज्यमानो राज्याय नैच्छद्राज्यं महाबलः ।
स जगाम वनं वीरो रामपादप्रसादकः ॥ ३४ ॥

इस प्रकार देव, गन्धर्व आदि के समान वे तीनों वहाँ रहने लगे। उधर राम के चित्रकूट जाते ही पुत्र के वियोग से शोकातुर हो विलाप करते हुए राजा दशरथ स्वर्ग को गये। उनके देहावसान के पश्चात् वसिष्ठादि मुख्य मुख्य ब्राह्मणों ने राज्य ग्रहण करने के लिये भरत से अनुरोध किया। महावीर भरत ने राज्य के प्रति अनिच्छा प्रकट करके रामचरण का प्रसाद पाने के लिये वन को प्रस्थान किया ॥ ३२–३४ ॥

गत्वा तु स महात्मानं रामं सत्यपराक्रमम् ।
अयाचद्भ्रातरं राममार्यभावपुरस्कृतः ॥ ३५ ॥
त्वमेव राजा धर्मज्ञ इति रामं वचोऽब्रवीत् ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDE- Delhi



रामोऽपि परमोदारः सुमुखः सुमहायशाः ॥ ३६ ॥
न चेच्छत् पितुरादेशाद्राज्यं रामो महाबलः ।
पादुके चास्य राज्याय न्यासं दत्त्वा पुनः पुनः ॥३७ ॥

भरत ने आर्यभाव को दृष्टिपथ में रख कर पराक्रमी रामचन्द्रजी से याचना की कि हे धर्मज्ञ ! आपही वस्तुतः राजा हैं। तब परमोदार, सुमुख, महायशस्वी रामचन्द्र ने पिता की आज्ञा पालन करना अपना धर्म समझ राज्य से अनिच्छा प्रकट की और भरत को बहुत कुछ नीचा ऊँचा समझाकर राज्य के लिये अपनी पादुका ( खड़ाऊँ ) दे दी ॥ ३५-३७ ॥

निवर्तयामास ततो भरतं भरताग्रजः ।
स काममनवाप्यैव रामपादावुपस्पृशन् ॥ ३८ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



राम ने भरत को लौटने की आज्ञा दी, तब अपनी कामना को सफल न देख भरत ने राम के चरणों को स्पर्श करके विदा ली ॥ ३८ ॥

नान्दिग्रामेऽकरोद्राज्यं रामागमनकाङ्क्षया ।
गते तु भरते श्रीमान् सत्यसन्धो जितेन्द्रियः॥ ३९ ॥
रामस्तु पुनरालक्ष्य नागरस्य जनस्य च ।
तत्रागमनमेकाग्रो दण्डकान् प्रविवेश ह ॥ ४० ॥

राम के आगमन की आकांक्षा से पूर्ण भरत नान्दिग्राम में निवास कर राज्य करने लगे । उनके चले जाने के बाद सत्यसन्ध, श्रीमान् एवं जितेन्द्रिय रामचन्द्र ने वहाँ नगर वासियों का आगमन देख, दण्डकारण्य में प्रवेश किया ॥ ३९–४० ॥

प्रविश्य तु महारण्यं रामो राजीवलोचनः ।
विराधं राक्षसं हत्वा शरभङ्गं ददर्श ह ॥ ४१ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MoEF - Delhi


राजीवलोचन राम ने महारण्य में प्रवेश कर विराध नामक राक्षस का वध किया, एवं शरभङ्ग ऋषि को देखा ॥ ४१ ॥

सुतीक्ष्णं चाप्यगस्त्यं च अगस्त्यभ्रातरँ तथा ।
अगस्त्यवचनाच्चैव जग्राहैन्द्रं शरासनम् ॥ ४२ ॥
खड्गञ्च परमप्रीतस्तूणौ चाक्षयसायकौ
वसतस्तस्य रामस्य वने वनचरैः सह ॥ ४३ ॥

वहाँ सुतीक्ष्ण, अगस्त्य, एवं अगस्त्य के भाई इत्यादि के दर्शन हुए। अगस्त्य की आज्ञा से राम ने इन्द्रधनुष, तलवार, तरकस और बाण धारण किये और वनचरों के साथ रहने लगे ॥ ४२-४३ ॥

ऋषयोऽभ्यागमन् सर्वे वधायासुररक्षसाम् ।
स तेषां प्रतिशुश्राव राक्षसानां तदा वने ॥ ४४ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



प्रतिज्ञातश्च रामेण वधः संयति रक्षसाम् ।
ऋषीणामग्निकल्पानां दण्डकारण्यवासिनाम् ॥ ४५ ॥

वहाँ सम्पूर्ण ऋषि, राक्षसों के वध के लिये अनुरोध करने को रामचन्द्र के पास आये, तब राम ने दण्डकारण्य-निवासी अग्नि के समान तेजस्वी ऋषियों के सामने राक्षसों का वध करने की प्रतिज्ञा की ॥ ४४-४५ ॥

तेन तत्रैव वसता जनस्थाननिवासिनी ।
विरूपिता शूर्पणखा राक्षसी कामरूपिणी ॥४६॥

राम ने, वहाँ रहनेवाली, कामरूपिणी, राक्षसी शूर्पणखा को विरूपिणी कर दिया॥४६॥

ततः शूर्पणखावाक्यादुद्युक्तान् सर्वराक्षसान् ।
खरं त्रिशिरसं चैव दूषणं चैव राक्षसम् ॥ ४७ ॥

Jagannath Bhattarai Collection, Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


निजघान रणे रामस्तेषां चैव पदानुगान्
वने तस्मिन् निवसता जनस्थाननिवासिनाम् ॥ ४८ ॥

रक्षसां निहतान्यासन् सहस्राणि चतुर्दश ।
ततो ज्ञातिवधं श्रुत्वा रावणः क्रोधमूर्च्छितः ॥४९॥

सहायं वरयामास मारीचं नाम राक्षसम् ।
वार्यमाणः सुबहुशो मारीचेन स रावणः ॥ ५० ॥

न विरोधो बलवता क्षमो रावण तेन ते ।
अनादृत्य तु तद्वाक्यं रावणः कालचोदितः ॥ ५१ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



जगाम सहमारीचस्तस्याश्रमपदं तदा ।
तेन मायाविना दूरमपवाह्य नृपात्मजौ ॥ ५२ ॥

इसके बाद, शूर्पणखा द्वारा प्रेरित खर, त्रिशिरा और दूषणादि राक्षसों को सेना सहित मारा तथा जनस्थाननिवासी चौदह हजार राक्षसों का वध किया । अपनी जाति का इस प्रकार नाश होते हुए सुनकर रावण क्रोध से मूर्च्छित हो गया और सहायता के लिये मारीच राक्षस को कहा । उसने अनेक प्रकार से समझाकर कहा कि हे रावण ! बलवान् के साथ विरोध करना उचित नहीं है, तथापि कालप्रेरित रावण ने उसकी बात न मानी और उसके साथ राम के आश्रम के निकट गया । वहाँ जाकर वह मायावी मारीच राजा दशरथ के पुत्र राम और लक्ष्मण को दूर ले गया ॥ ४७–५२ ॥

जहार भार्यां रामस्य गृध्रं हत्वा जटायुषम् ।
गृध्रञ्च निहतं दृष्ट्वा हृतां श्रुत्वा च मैथिलीम् ॥५३॥

Jagannath Bhattarai Collection, Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDP- Delhi


राघवः शोकसन्तप्तो विललापाकुलेन्द्रियः ।
ततस्तेनैव शोकेन गृध्रं दग्ध्वा जटायुषम् ॥५४॥

उधर रावण जटायु नामक गिद्ध को मारकर रामचन्द्र की पत्नी को हर ले गया। गिद्ध को मरा हुआ देख एवं सीता का हरण सुनकर शोक से सतप्त हो राम विलाप करने लगे। पश्चात् उसी शोक में जटायु को जला कर परम पद दिया ॥ ५३–५४ ॥

मार्गमाणो वने सीतां राक्षसं संददर्श ह ।
कबन्धं नाम रूपेण विकृतं घोरदर्शनम् ॥ ५५ ॥

सीता को वन में ढूँढ़ते हुए महा भयङ्कर विचित्र रूप वाले कबन्ध नामक राक्षस को देखा ॥ ५५ ॥

तं निहत्य महाबाहुर्ददाह स्वर्गतश्च सः ।
ततोऽस्य कथयामास शबरीं धर्मचारिणीम् ॥ ५६ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



महाबाहु राम ने उसे मार कर जला दिया । वह राक्षस स्वर्ग को गया और उसीने धर्मचारिणी शबरी का हाल कहा ॥ ५६ ॥

श्रमणां धर्मनिपुणामभिगच्छेति राघव ।
सोऽभ्यगच्छन्महातेजाः शबरीं शत्रुसूदनः ॥ ५७ ॥

उसने कहा कि हे रावण ! वह शबरी धर्मनिपुण है उसके पास जाइये, तब महातेजस्वी शत्रु–विनाशकारी राम शबरी के पास गये ॥ ५७ ॥

शबर्या पूजितः सम्यग्रामो दशरथात्मजः ।
पम्पातीरे हनुमता सङ्गतो वानरेण ह ॥ ५८ ॥

वहाँ शबरी द्वारा भली प्रकार आदृत हुए, दशरथात्मज राम पम्पातीर में हनुमान् बन्दर से मिले ॥ ५८ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF, Delhi



हनुमद्वचनाच्चैव सुग्रीवेण समागतः ।
सुग्रीवाय च तत्सर्वं शंसद्रामो महाबलः ॥ ५९ ॥

हनुमान् के कहने से सुग्रीव मिलें और उससे महाबली रामचन्द्रजी ने अपना हाल कहा ॥ ५९ ॥

आदितस्तद्यथावृत्तं सीतायाश्च विशेषतः ।
सुग्रीवश्चापि तत्सर्वं श्रुत्वा रामस्य वानरः ॥ ६० ॥
चकार सख्यं रामेण प्रीतश्चैवाग्निसाक्षिकम् ।
ततो वानरराजेन वैरानुकथनं प्रति ॥ ६१ ॥

उन्होंने आरम्भ में अपना सब वृत्तान्त कहा और सीता-हरण का हाल विशेष रूप से वर्णन किया । सब हाल सुन, सुग्रीव ने भी प्रसन्न चित्त से अग्नि को साक्षी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



देकर मित्रता की, तदनन्तर वानरराज सुग्रीव ने वालि के साथ अपने वैर का हाल कहना आरम्भ किया ॥ ६०-६१ ॥

रामायावेदितं सर्वं प्रणयाद् दुःखितेन च ।
प्रतिज्ञातञ्च रामेण तदा वालिवधं प्रति ॥ ६२ ॥

परम दुखी सुग्रीव ने बड़ी नम्रता पूर्वक राम से अपना सब हाल कहा । तब राम ने वालि को मारने की प्रतिज्ञा की ॥ ६२ ॥

वालिनश्च बलं तत्र कथयामास वानरः ।
सुग्रीवः शङ्कितश्चासीन्नित्यं वीर्येण राघवे ॥ ६३ ॥

तब सुग्रीव ने वालि के बल का वर्णन किया और उसे सन्देह ही रहा कि यह वालि को कैसे मार सकेंगे ॥ ६३ ॥

राघवप्रत्ययार्थं तु दुन्दुभेः कायमुत्तमम् ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF, Delhi.



दर्शयामास सुग्रीवो महापर्वतसन्निभम् ॥ ६४ ॥

राम के प्रत्ययार्थ पर्वत के समान दुन्दुभि राक्षस का शरीर सुग्रीव ने दिखाया॥६४॥

उत्स्मायित्वा महाबाहुः प्रेक्ष्य चास्थि महाबलः ।
पादाङ्गुष्ठेन चिक्षेप सम्पूर्णं दशयोजनम् ॥ ६५ ॥

आजानुबाहु राम ने, मुसकुराते हुए, उस महा बलवान् राक्षस की हड्डी को पैर के अँगूठे से उठा दश योजन पर फेंक दिया ॥ ६५ ॥

बिभेद च पुनस्तालान् सप्तैकेन महेषुणा ।
गिरिं रसातलं चैव जनयन् प्रत्ययं तदा ॥ ६६ ॥

और एक ही बाण से सात ताल के वृक्षों, पर्वत एवं रसातल को भेद कर सुग्रीव के हृदय में दृढ़ विश्वास उत्पन्न करा दिया कि हम वालि को मारने में पूर्णरूप से समर्थ हैं ॥ ६६ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः ।
किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥ ६७॥

उस पराक्रम को देख, विश्वास कर के सुग्रीव बड़ी प्रसन्नता से राम के साथ किष्किन्धा नामक गुफा के द्वार पर गया ॥ ६७ ॥

ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः ।
तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥ ६८ ॥

वहाँ जाकर सुवर्ण समान पीतवर्ण वाले, वानरश्रेष्ठ सुग्रीव ने गर्जना किया। उस भयङ्कर गर्जन को सुनकर बन्दरों का राजा वालि किष्किन्धा से निकल आया ॥ ६८ ॥

अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः ।
निजघान च तत्रैनं शरेणैकेन राघवः ॥ ६९ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



तारा की बात न मान, उसका अनादर करके वालि, सुग्रीव के साथ युद्ध करने आया, किन्तु एक ही बाण से उसे राम ने मार डाला ॥ ६६ ॥

ततः सुग्रीववचनाद्धत्वा वालिनमाहवे ।
सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघवः प्रत्यपादयत् ॥ ७० ॥

वालि की मृत्यु के पश्चात् वचनबद्ध होने के कारण राम ने वह राज्य सुग्रीव को ही दिया ॥ ७० ॥

स च सर्वान् समानीय वानरान् वानरर्षभः ।
दिशः प्रस्थापयामास दिदृक्षुर्जनकात्मजाम् ॥ ७१ ॥

कपिराज सुग्रीव ने दशो दिशाओं में बन्दरों को सीता का पता लगाने के लिये भेजा ॥ ७१ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



ततो गृध्रस्य वचनात्सम्पातेर्हनुमान् बली ।
शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे लवणार्णवम् ॥ ७२ ॥

सम्पाति गिद्ध से पता पाकर महा बलवान् हनुमान् सौ योजन तक विस्तृत खारे समुद्र को लाँघ गये ॥ ७२ ॥

तत्र लंकां समासाद्य पुरीं रावणपालिताम् ।
ददर्श सीतां ध्यायन्तीमशोकवनिकागताम् ॥ ७३ ॥

हनुमान् ने रावण द्वारा रक्षित लङ्का में जाकर अशोक वन में राम को ध्यान करती हुई सीता को देखा ॥ ७३ ॥

निवेदयित्वाऽभिज्ञानं प्रवृत्तिं विनिवेद्य च ।
समाश्वास्य च वैदेहीं मर्दयामास तोरणम् ॥ ७४ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



पञ्च सेनाग्रगान् हत्वा सप्त मन्त्रिसुतानपि ।
शूरमक्षं च निष्पिष्य ग्रहणं समुपागमत् ॥ ७५ ॥

सीता से राम का सम्पूर्ण समाचार एवं प्रवृत्ति कही और सीता को आश्वासन देकर रण में पाँच सेनापतियों, सात मन्त्रिपुत्रों एवं परम शूर अक्षयकुमार को मार स्वयं भी पकड़ गये ॥ ७४-७५ ॥

अस्त्रेणोन्मुक्तमात्मानं ज्ञात्वा पैतामहाद्वरात् ।
मर्दयन्राक्षसान् वीरो मन्त्रिणस्तान् यदृच्छया ॥ ७६ ॥
ततो दग्ध्वा पुरीं लङ्कामृते सीतां च मैथिलीम् ।
रामाय प्रियमाख्यातुं पुनरायान्महाकपिः ॥ ७७ ॥

फिर श्रेष्ठ ब्रह्मपाश से अपने को मुक्त देख, इच्छानुसार मन्त्रियों एवं बड़े बड़े राक्षसों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu; Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



को डराया, इसके पश्चात् सीता के निवासस्थान के अतिरिक्त निःशेष लङ्का को जलाकर सीताजी का वृतान्त कहने के लिये लौटे ॥ ७६-७७ ॥

सोऽभिगम्य महात्मानं कृत्वा रामं प्रदक्षिणम् ।
न्यवेदयदमेयात्मा दृष्टा सीतेति तत्त्वतः ॥ ७८ ॥

महात्मा राम के पास जाकर उनकी प्रदक्षिणा करके अतुल बलशाली हनुमान् ने सम्पूर्ण वृत्तान्त को सुनाया ॥ ७८ ।

ततः सुग्रीवसहितो गत्वा तीरं महोदधेः ।
समुद्रं क्षोभयामास शरैरादित्यसन्निभैः ॥ ७९ ॥

तब राम, सुग्रीव सहित समुद्र तट पर गये और सूर्यसमान तेज वाले बाणों से समुद्र को डराया ॥ ७९ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



दर्शयामास चात्मानं समुद्रः सरितां पतिः ।
समुद्रवचनाच्चैव नलं सेतुमकारयत् ॥ ८० ॥

नदियों का स्वामी समुद्र हाथ जोड़कर सामने आया तब उसके कहने से नल द्वारा राम ने पुल तैयार कराया ॥ ८० ॥

तेन गत्वा पुरीं लंकां हत्वा रावणमाहवे ।
रामः सीतामनुप्राप्य परां व्रीडामुपागमत् ॥ ८१ ॥

उस सेतु से लङ्का में जा, रावण को मार सीता को पाकर राम लज्जित से हुए ॥८१॥

तामुवाच ततो रामः परुषं जनसंसदि ।
अमृष्यमाणा सा सीता विवेश ज्वलनं सती ॥८२॥

राम ने सभा में सीता को कटु वचन कहे जिसके सहन करने में असमर्थ हो परमसती सीता ने अग्नि में प्रवेश किया ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



ततोऽग्निवचनात्सीतां ज्ञात्वा विगतकल्मषाम् ।
कर्मणा तेन महता त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ८३ ॥
सदेवर्षिगणं तुष्टं राघवस्य महात्मनः ।
बभौ रामः संप्रहृष्टः पूजितः सर्वदैवतैः ॥ ८४ ॥

तब अग्नि के वचन से सीता जी को निष्पाप समझा। राम के इस कर्म से चराचर, देव, ऋषि सब प्रसन्न हुए, एवं प्रसन्न हृदय राम देवताओं से पूजित होकर सुशोभित हुए ॥ ८३–८४ ॥

अभिषिच्य च लंकायां राक्षसेन्द्रं विभीषणम् ।
कृतकृत्यस्तदा रामो विज्वरः प्रमुमोद ह ॥ ८५ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



लङ्का में राक्षसश्रेष्ठ विभीषण को राजतिलक देकर सन्ताप से मुक्त हो कृतकृत्य एवं आनन्दित हुए ॥ ८५ ॥

देवताभ्यो वरं प्राप्य समुत्थाप्य च वानरान् ।
अयोध्यां प्रस्थितो रामः पुष्पकेण सुहृद्वृतः ॥८६॥

देवताओं से वर पा, वानरों तथा प्रियजनों के साथ पुष्पक विमान से अयोध्या को प्रस्थान किया ॥ ८६ ॥

भरद्वाजाश्रमं गत्वा रामः सत्यपराक्रमः ।
भरतस्यान्तिके रामो हनूमन्तं व्यसर्जयत् ॥८७॥

सत्यपराक्रम राम ने भरद्वाज के आश्रम पर पहुँच कर हनुमान् को भरत के पास भेजा ॥ ८७ ॥

पुनराख्यायिकां जल्पन् सुग्रीवसहितस्तदा ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



पुष्पकं तत्समारुह्य नन्दिग्रामं ययौ तदा ॥ ८८ ॥

पुनः आपस में बातचीत करते हुए सुग्रीव के साथ पुष्पक विमान पर बैठ कर नन्दिग्राम को गये ॥ ८८ ॥

नन्दिग्रामे जटां हित्वा भ्रातृभिः सहितोऽनघः ।
रामः सीतामनुप्राप्य राज्यं पुनरवाप्तवान् ॥८९॥

नन्दिग्राम में भाइयों के साथ जटा को त्याग, निष्पाप राम ने सीता को पाकर पुनः राज्य ग्रहण किया ॥ ८९ ॥

प्रहृष्टमुदितो लोकस्तुष्टः पुष्टः सुधार्मिकः ।
निरामयो ह्यरोगश्च दुर्भिक्षभयवर्जितः ॥ ९० ॥
न पुत्रमरणं केचिद् द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः क्वचित् ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents containing the personal colleciton of Jagannath Bhattarai ji from Kathmandu, Nepal.

CV:

Jagannath Bhattarai
Date of Birth: 31 December 1960
Place of Birth: Kathmandu, Nepal
Address: Nagarjun (Ramkot), Kathmandu

Educational Qualifications
Bachelor of Science (B.Sc.) – Major in Biology
Master's Degree – Sociology & Anthropology
Shastri (Ongoing) – Balmiki Vidyapeeth

Professional Experience
Government School Teacher (Madhyamik Pratham Shreni)
Taught at Secondary Level (Madhyamik)
Taught at Higher Secondary Level (Uchcha Madhyamik)
Served as Head Teacher
Led academic and administrative development
Strengthened institutional performance and student outcomes

Areas of Interest
Sanskrit Vyakaran
Spiritual & Philosophical Studies
Educational Leadership

Digitization by eGangotri Trust
Funding by MIDF, New Delhi